मूल्य 1 रु.

वर्षः 10 - अंक : 245, मुंबई, बुधवार, 9 दिसंबर, 2020 ■ RNI.NO. MAHHIN/2010/34146 ■ संपादकः दिलशाद एस. खान

दैनिक मुंबई हलचल

भारत सरकार द्वारा विज्ञापन हेतु मान्यता प्राप्त (R)

अब हर सच होगा उजागर

अमेरिकी एफडीए ने फाइजर की वैक्सीन को सही माना

जल्द मिल सकती है अनुमति

वाशिंगटन। संयुक्त राज्य अमेरिका के खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने एक विस्तृत विश्लेषण में निष्कर्ष दिया है कि अमेरिका में इस्तेमाल के लिए जिस पहली कोविड-19 वैक्सीन (फाइजर और बायोएनटेक की वैक्सीन) पर विचार किया जा रहा, चिकित्सकीय अध्ययन में यह वैक्सीन निर्धारित मानकों पर सफल साबित हुई है। इसके बाद माना जा रहा है कि इस वैक्सीन को अमेरिका में इस्तेमाल के लिए जल्द ही मंजूरी दी जा सकती है। ब्रिटेन और बहरीन पहले ही फाइजर की इस वैक्सीन के आपातकालीन इस्तेमाल की अनुमति दे चुके हैं। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

KISAN ANDOLAN

सरकार पर दबाव बनाने की कोशिश

आज राष्ट्रपति से मिलेंगे राहुल-पवार समेत 5 नेता

संवाददाता

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के कृषि कानूनों के विरोध के बीच विपक्षी दलों का एक प्रतिनिधिमंडल राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से मुलाकात करेगा। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, एनसीपी प्रमुख शरद पवार, सीपीआई (एम) के महासचिव सीताराम येचुरी समेत 5 नेता बुधवार शाम 5 बजे राष्ट्रपति कोविंद से मिलेंगे। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

ये नेता करेंगे राष्ट्रपति से मुलाकातः आज होनी वाली मुलाकात में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, एनसीपी प्रमुख शरद पवार, सीपीआई (एम) के सीताराम येचुरी, सीपीआई के डी राजा और डीएमके के टीकेएस एलनगोवन हैं।

शाह से बातचीत में भी नहीं निकला हल

दिल्ली के गाजीपुर, टिकरी, सिंधु और कई बॉर्डर प्वाइंट पर हजारों की तादाद में किसान आंदोलन कर रहे हैं। ऐसे में गाजीपुर की ये फोटो दिलचस्प है, जहां दिल्ली-मेरठ हाईवे पर कृषि कानूनों के विरोध में एक किसान अकेला लेटा है। कृषि कानूनों की वापसी के लिए आंदोलन 12वें दिन मंगलवार को किसानों ने भारत बंद का ऐलान किया। असर भी दिखा और हलचल भी। पहली बार गृह मंत्री अमित शाह ने किसान नेताओं से मुलाकात की। हालांकि, कुछ ठोस इस मुलाकात में भी नहीं निकला। सरकार ने बुधवार को किसानों को प्रस्ताव देने की बात कही है। बैठक में शामिल किसान नेता हन्नान मुल्ला ने कहा कि सरकार कानून वापसी को तैयार नहीं है। हन्नान मुल्ला ने बताया कि आज केंद्र और किसानों के बीच होने वाली बैठक भी नहीं होगी।

डोकलाम विवाद

एलएसी पर चीन की चालबाजी

तराई क्षेत्र में बना लिए 20 सैन्य शिविर

संवाददाता

नई दिल्ली। चीन वर्ष 2017 में डोकलाम में भारतीय सेना से मुंहतोड़ जवाब मिलने के बाद से ही वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सैन्य ताकत बढ़ाने में लगा हुआ है। डोकलाम संकट के बाद से चीन ने लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक एलएसी के पास गहराई वाले इलाकों में सैन्य शिविर बना लिए हैं। सूत्रों से मंगलवार को यह जानकारी मिली। भारत और चीन की सेनाओं के बीच अप्रैल-मई से ही एलएसी पर तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

हमारी बात

तेल की बढ़ती कीमतें

पेट्रोल की कीमत दो साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है, तो यह अभी बहुत चिंता की न सही, लेकिन विचार की बात जरूर है। भारतीय रिजर्व बैंक ने पिछले दिनों बैंक दरों में कोई बदलाव न करते हुए यह जाहिर कर दिया था कि वह बढ़ती महंगाई को रोकने के पक्ष में नहीं है और अब तेल कंपनियों द्वारा लगातार कीमत में बढ़ोतरी यह बता रही है कि केंद्र सरकार भी अभी महंगाई के प्रति गंभीर नहीं है। तभी तो लगातार छठे दिन पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी की गई। सोमवार को दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 83.71 रुपये प्रति लीटर हो गई। इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के अनुसार, डीजल की कीमत भी संशोधित करते हुए 73.87 रुपये प्रति लीटर कर दी गई है। दिल्ली में सितंबर 2018 में पेट्रोल-डीजल की कीमतें इसी ऊंचाई पर थीं। करीब दो महीने के बाद तेल कंपनियों ने 20 नवंबर से तेल की कीमतों में दैनिक संशोधन शुरू किया है और असर साफ दिख रहा है। पिछले 16 दिनों में ही पेट्रोल की कीमत 2.37 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 3.12 रुपये प्रति लीटर बढ़ी है। गौर करने की बात है, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में पेट्रोल की कीमत 90.34 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 80.51 रुपये प्रति लीटर हो गई है। कोलकाता व चेन्नई में भी पेट्रोल-डीजल की कीमत में दिल्ली के मुकाबले ज्यादा वृद्धि दिख रही है। सरकारी नीति के तहत सार्वजनिक क्षेत्र की तेल विपणन कंपनियां इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम व हिन्दुस्तान पेट्रोलियम तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों और विदेशी विनिमय दर के आधार पर प्रतिदिन पेट्रोल व डीजल की दरों में संशोधन करती हैं। इन कंपनियों को दी गई इस ताकत के बावजूद केंद्र सरकार की अपनी भूमिका है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। वैसे आज सरकार के लिए पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ाना मजबूरी भी है, क्योंकि कोरोना के समय में उसकी कमाई घटी है और विभिन्न योजनाओं और विकास कार्यों के लिए धन चाहिए। पेट्रोल-डीजल से मिलने वाले राजस्व से सरकार को बल मिलता है। चूंकि नया टैक्स लगाना आसान नहीं, उसमें अलोकप्रियता का खतरा होता है, इसलिए सरकार को पेट्रोल-डीजल के जरिए कमाई ज्यादा मुफीद लगती आई है। जैसे-जैसे पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ते हैं, वैसे-वैसे सरकार की कमाई भी बढ़ती है। किसानों और उत्पादकों को बल देने के लिए भी महंगाई को जरूरी बताया जा रहा है। कोरोना के प्रभाव में एक समय ऐसा आ गया था, जब रोजमर्रा के सामान की कीमतें घटने लगी थीं। खुदरा मूल्य अलाभकारी होने लगे थे। ऐसे में, महंगाई बढ़ने देना आर्थिक सुधार का एक उपाय है। हालांकि, यह विशेष चिंता का विषय है कि पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ने से असली उत्पादकों व किसानों को कितना लाभ होगा? इस पर सरकार को जरूर सोचना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमत बढ़ने की वजह से तेल कंपनियों को मूल्य में बढ़ोतरी करनी पड़ रही है। ऐसे में, सवाल बड़ा है, कीमत को कहां तक बढ़ने दिया जाएगा? पेट्रोल-डीजल की कीमत अगर ज्यादा बढ़ेगी, तो जाहिर है, महंगाई को सीधे बल मिलेगा, लेकिन सरकार को देखना होगा कि कोरोना व लॉकडाउन से त्रस्त लोग महंगाई को किस हद तक झेलने की स्थिति में हैं। लगे हाथ, सबको यह भी सोच लेना चाहिए कि भारत बंद से महंगाई घटेगी या बढ़ेगी।

विपक्ष के लिए मौका !

जिस तरह खेलों में होता है, वैसे ही राजनीति में भी अच्छा खिलाड़ी अपने लिए मौके बनाता है और उसे अपने फायदे में तब्दील करता है। पिछले साढ़े छह साल का संयोग कुछ ऐसा है कि देश में विपक्ष को मौके तो बहुत मिले लेकिन वह अपने फायदे के लिए उसका इस्तेमाल नहीं कर पाया। उलटे जिन मसलों पर सरकार को घिरना चाहिए था, उससे जवाब-तलब होना चाहिए था, उन मसलों पर भी विपक्ष ही कठघरे में आ गया। अब फिर एक मौका है विपक्ष के पास कि वह सरकार की कमियों को सामने लाए और लोगों को यकीन दिलाए कि सरकार जैसा अपने को दिखा रही है, असल में वैसी है नहीं। उसके खाने के और दिखाने के दांत अलग अलग हैं। प्रधानमंत्री अपने भाषणों में जो कहते हैं वह शासन की असलियत नहीं है। प्रधानमंत्री कहते हैं कि ह्यदेश नहीं बिकने दूंगाह्न पर उनकी सरकार में साढ़े छह साल में सबसे ज्यादा सरकारी कंपनियां बिकी हैं या सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में सरकार की हिस्सेदारी बिकी है। विपक्ष यह असलियत देश के लोगों को क्यों नहीं बता सकता है और लोग क्यों नहीं इस पर यकीन करेंगे?

केंद्र सरकार के बनाए तीन कृषि कानूनों के विरोध में किसान प्रदर्शन कर रहे हैं। किसान अपने सीमित साधनों में लोगों को बता रहे हैं कि इन कानूनों का असली मकसद क्या है। अगर यहीं काम विपक्ष करे तो उसका असर ज्यादा होगा। इसमें लोगों को सिर्फ सरकार की असली मंशा बतानी है। कानून का असली मकसद बताना है कि आखिर जब किसानों ने ऐसे किसी कानून की मांग नहीं की थी तो किस मकसद से ये कानून बनाए गए? कोरोना वायरस की महामारी का समय इसके लिए क्यों चुना गया? राज्यसभा में जोर-जबरदस्ती कानून क्यों पास कराया गया? क्या यह महज संयोग है कि सरकार ने आवश्यक वस्तु कानून में बदलाव करके असीमित मात्रा में खाने-पीने की चीजों के भंडारण की इजाजत दी और देश की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस समूह ने फ्यूचर ग्रुप का अधिग्रहण कर लिया? क्या यह महज संयोग है कि देश के खुदरा कारोबार पर रिलायंस समूह का कब्जा हो गया और अब हर शहर में जियो मार्ट खोले जा रहे हैं?

विपक्ष को सरकार से यह पूछना चाहिए कि यह संयोग है या प्रयोग कि सरकार ने कृषि कानून बनाए उससे पहले पंजाब में अनाज भंडारण के लिए अडानी समूह के बड़े बड़े साइलोज बनाए जाने लगे थे? यह भी क्या संयोग है कि अडानी समूह अब एक एक करके खाने-पीने की सारी चीजें बनाने लगा है और इस बात का विज्ञापन टेलीविजन पर करके बता भी रहा है? क्या यह संयोग है कि भारत सरकार ने एग्रीकल्चर के लिए नहीं एग्री बिजनेस के लिए एक लाख करोड़ रुपए के कर्ज का प्रावधान किया है, जिसका फायदा किसान को नहीं, बल्कि कृषि उत्पादों का कारोबार करने वालों को मिलेगा? कृषि उद्यमिता, स्टार्टअप, एग्री लॉजिस्टिक्स के नाम पर उन्हें ही कर्ज मिलेगा और उनका ही कर्ज माफ होगा। क्या यह भी संयोग है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुंबई गए तो अडानी एग्री कंपनी के एमडी से मिले? विपक्ष ये सवाल क्यों नहीं उठा सकता है? अगर विपक्ष ये सवाल उठाता है, लोगों तक ले जाता है तो क्या लोग इस पर यकीन नहीं करेंगे? किसानों का आंदोलन असल में विपक्ष के लिए एक बड़ा मौका है, जिसका वह राजनीतिक इस्तेमाल कर सकता है। विपक्ष को किसान आंदोलन का राजनीतिकरण नहीं करना है। अगर यह गलती हुई तो किसानों को बड़ा नुकसान होगा। किसानों का आंदोलन अपनी जगह है, जिसे अपने सीमित साधनों में किसान लड़ रहे हैं। विपक्ष के लिए यह आंदोलन अलग से मौका है। असल में नरेंद्र मोदी की सरकार को लेकर दो तरह की धारणा देश में बनाई गई है। भारी भरकम खर्च, प्रचार आदि के जरिए यह स्थापित किया गया है कि मोदी हमेशा देश के लिए सोचते और काम करते हैं, उनका अपना कोई निजी एजेंडा नहीं है, उनकी सरकार देशभक्त है। दूसरी, धारणा यह है कि मोदी को पीछे हटाना मुमकिन नहीं है। किसान आंदोलन के सहारे ये दोनों धारणाएं तोड़ी जा सकती है।

विपक्ष बिना किसी खास मेहनत के यह साबित कर सकता है कि केंद्र के बनाए तीनों कृषि कानून किसान के लिए नहीं, बल्कि कारपोरेट के लिए हैं। विपक्ष यह भी साबित कर सकता है कि कारपोरेट में भी सिर्फ दो क्रोनी कैपिटलिस्ट हैं, जिनको फायदा पहुंचाने के लिए ये कानून बनाए गए हैं। कम से कम चार पांच राज्यों के किसान ये मुद्दे उठा रहे हैं और बाकी राज्यों के किसानों का इन मुद्दों पर मौन समर्थन हैं। इसलिए विपक्ष के लिए लोगों तक अपनी बात पहुंचाना आसान है। राहुल गांधी ने नरेंद्र मोदी की सरकार को सूट-बूट की सरकार कहना बंद कर दिया है। यह किसान आंदोलन उसी सूट-बूट के विमर्श का विस्तार है। फर्क यह है कि इस बार किसान और एक निश्चित संख्या में आम लोग सरकार और सत्तारूढ़ दल के साथ साथ कारोबारियों से भी नाराज हैं। किसान भी सरकार के क्रोनी कारोबारियों का नाम लेकर उन पर हमले कर रहे हैं। सो, यह सिर्फ राजनीतिक मुद्दा नहीं है, बल्कि कारोबारी विमर्श भी बन गया है। ध्यान रहे कोई भी कारोबारी यह नहीं चाहेगा कि उसके ऊपर ऐसा फोकस बने, जिससे वह आम लोगों की नजर में विलेन बने। विपक्ष ने पिछले साढ़े छह साल में जो मौके गंवाएं हैं, यह उनकी भरपाई का समय है। वह इन कृषि कानूनों की असलियत सामने लाकर बता सकती है कि केंद्र की सरकार ने अपने चुनिंदा क्रोनी कारोबारियों के लिए ये कानून बनाए हैं। चूंकि किसान खुद ही उन क्रोनी कारोबारियों के नाम ले रहे हैं इसलिए विपक्ष को अपनी बात कहने और लोगों को यकीन दिलाने में ज्यादा दिक्कत नहीं होगी। इसके बाद इन कानूनों पर सरकार का पीछे हटना महज वक्त की बात होगी। इससे पहले भी भूमि अधिग्रहण बिल में बदलाव के प्रस्ताव पर ही मोदी सरकार पीछे हटी थी। इस बार कृषि कानूनों पर ऐसा हो सकता है। सो, अगर किसानों के बहाने विपक्ष यह साबित करता है कि सरकार कारपोरेट के लिए काम कर रही है, पूंजीपतियों के लिए काम कर रही है, चुनिंदा क्रोनी कारोबारियों के हितों में कानून बना रही है तो देशभक्त बनाम देशद्रोही का पूरा विमर्श बदल सकता है। सरकार देशभक्त है और विपक्ष देशद्रोही, यहीं इस सरकार की अब तक की राजनीतिक सफलता की बुनियाद रही है। किसान आंदोलन से यह मिथक टूट सकता है। इसलिए यह विपक्ष के लिए बड़ा मौका है। उसे आगे बढ़ कर इस मौके का इस्तेमाल करना चाहिए।

मंदी की बड़ी गहरी मार

दुनिया की आर्थिक हालत फिलहाल ऐसी हो गई है, जैसी पिछले कम से कम 30 साल में नहीं देखी गई। ज्यादा चिंताजनक बात यह है कि इस हाल से उबरने की अभी कोई सूरत भी नजर नहीं आ रही है। संयुक्त राष्ट्र के कॉन्फ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलपमेंट (यूएनसीटीएडी) ने इस बारे में बेहद गंभीर तस्वीर पेश की है। उसके मुताबिक कोरोना महामारी के कारण विभिन्न देशों में लोगों की आमदनी का घट रही है। बेरोजगारी की वजह से गरीब 47 देशों के सवा तीन करोड़ करोड़ लोग अत्यंत गरीबी के दलदल में फंसते दिख रहे हैं। इन देशों में कोरोना वायरस के कारण लोगों के स्वास्थ्य पर शुरूआती असर जितनी पहले आशंका थी, उससे कम रहा है। लेकिन इसका आर्थिक असर बहुत ज्यादा है। इसी का नतीजा है कि अक्टूबर 2010 से अक्टूबर 2020 के बीच के दशक में इन देशों में रही आर्थिक विकास दर का अनुमान अब घटाकर 5 फीसदी से घटा कर 0.4 फीसदी करना पड़ा है। इसके वजह से इन देशों की प्रति व्यक्ति आय में 2.6 फीसदी की गिरावट है। नतीजा यह है कि पहले से ही कमजोर जीवन स्तर वाले लोगों का जीवन स्तर अब और नीचे जा रहा है। उनकी गरीबी और ज्यादा बढ़ रही है। महामारी के पहले के दौर में जो थोड़ी और धीमी प्रगति हुई थी, वह भी अब खत्म होती दिख रही है। पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा की दिशा में मिली उपलब्धियां संकट के इस दौर में खत्म हो रही हैं। अब आशंका है कि भविष्य में कोरोना वायरस का फैलाव गरीब देशों के स्वास्थ्य तंत्र को और मुसीबत में डाल देगा, क्योंकि इसे संभालने की उनकी क्षमता पहले से भी अब कमजोर हो चुकी है। दुनिया पर छाई आर्थिक मंदी से गरीब देशों की अर्थव्यवस्था के लिए ज्यादा परेशानी पैदा हुई है।

दैनिक
मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

दिल्ली का आंदोलन पूरे देश में फैलना चाहिए, तभी सरकार पर दबाव बनेगा: अन्ना हजारे

अहमदनगर। सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे मंगलवार को आंदोलनरत किसानों को समर्थन देने के लिए एक दिवसीय भूख हड़ताल पर बैठे हैं। महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के रालेगण सिद्धि गांव में भूख हड़ताल पर बैठे अन्ना हजारे ने किसानों का साथ देते हुए भारत बंद का समर्थन किया है और केंद्र सरकार से नए कृषि कानूनों को रद्द करने की मांग की है। हजारे ने कहा कि ये आंदोलन पूरे देश में फैल जाना चाहिए, जिससे सरकार पर इन कानूनों को वापस लेने के लिए दबाव बन सके। एक रिकॉर्ड किए गए संदेश में, हजारे ने दिल्ली की सीमाओं पर किसानों के विरोध की सराहना करते हुए कहा कि आंदोलन के पिछले 10 दिनों में कोई हिंसा नहीं हुई है। मैं देश के लोगों से अपील करता हूं कि दिल्ली में जो आंदोलन चल रहा है, वह पूरे देश में फैल जाए। सरकार पर दबाव बनाने के लिए यह जरूरी है और इसे हासिल करने के लिए किसानों को सड़कों पर उतरने की जरूरत है।

स्वामीनाथन कमेटी की सिफारिशों के आधार पर मिले किसानों को लाभ

अन्ना हजारे ने कहा कि लेकिन किसी को भी हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए सड़कों पर आने और उनके मुद्दों को हल करने का यह 'सही समय' था। हजारे ने कहा कि 'मैंने पहले भी इसका समर्थन किया था, और ऐसा करना जारी रहेगा।' हजारे ने कहा कि किसानों को एमएसपी स्वामीनाथन कमेटी की सिफारिशों के आधार पर लाभ दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार ने अब तक केवल आश्वासन दिया है लेकिन इन मांगों को कभी पूरा नहीं किया।

जेल में चश्मा हुआ चोरी, कोर्ट ने कहा– जेल अफसरों को देनी पड़ेगी ट्रेनिंग ताकि इंसानियत जिंदा रहे

संवाददाता

मुंबई। महाराष्ट्र में कथित तौर पर भीमा कोरेगांव हिंसा मामले में मुंबई की तलोजा जेल में बंद मानवाधिकार कार्यकर्ता गौतम नवलखा का चश्मा चोरी हो गया। बंबई उच्च न्यायालय ने मंगलवार को नवलखा का चश्मा कथित तौर पर चोरी होने के मामले पर कहा कि मानवता सबसे महत्वपूर्ण है। बंबई उच्च न्यायालय ने जेल अधिकारियों को कैदियों की आवश्यकताओं के बारे में संवेदनशील बनाने के लिए एक कार्यशाला आयोजित करने पर जोर दिया। न्यायालय ने कहा कि जेल अफसरों को ट्रेनिंग देनी होगी ताकि उनमें इंसानियत बची रहे। बता दें कि नवलखा, एल्गार परिषद-माओवादी मामले में आरोपी हैं। न्यायमूर्ति एस एस शिंदे और न्यायमूर्ति एम एस कार्णिक की एक खंडपीठ ने कहा कि उन्हें पता चला कि किस प्रकार जेल के भीतर से नवलखा का चश्मा चोरी हो

गया और उनके परिजनों द्वारा कुरियर से भेजे गए नए चश्मों को जेल अधिकारियों ने लेने से मना कर दिया। न्यायमूर्ति शिंदे ने कहा, मानवता सबसे महत्वपूर्ण है। इसके बाद कोई और चीज आती है। आज हमें नवलखा के चश्मे के बारे में पता चला। अब जेल अधिकारियों के लिए भी एक कार्यशाला आयोजित करने का समय आ गया है। न्यायमूर्ति शिंदे ने कहा पूछा कि क्या इन छोटी-छोटी चीजों को भी देने से मना किया जा सकता है? यह मानवीय सोच है। नवलखा के परिजनों ने सोमवार को दावा किया था कि उनका चश्मा 27 नवंबर को तलोजा जेल के भीतर से चोरी हो गया था, जहां नवलखा बंद हैं। उन्होंने कहा था कि जब उन्होंने नवलखा के लिए नया चश्मा भेजा, तो जेल अधिकारियों ने उसे स्वीकार नहीं किया और वापस भेज दिया। परिजनों ने कहा कि नवलखा को बिना चश्मे के कुछ दिखाई नहीं देता। बता दें कि नवलखा को इस साल अप्रैल में कथित तौर पर उनके भीमा-कोरेगांव मामले से जुड़े होने के संबंध में गिरफ्तार किया गया था। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने अपनी सप्लीमेंट्री चार्जशीट में उन पर पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी इंटर सर्विस इंटेलीजेंस (आईएसआई) से संबंध होने का आरोप लगाया है।

यौन शोषण के 3 दोषियों को 20 साल की सजा, अदालत ने कहा– 4 साल की बच्ची को बयान नहीं सिखाया जा सकता

मुंबई। एक बच्ची के यौन शोषण में मुंबई की पॉस्को कोर्ट ने एक 20 वर्षीय युवक समेत 3 लोगों को 20 साल की सजा सुनाई है। सजा सुनाने के लिए अदालत ने बच्ची के बयान को आधार बनाया है। सजा सुनाते वक्त अदालत ने कहा कि 4 साल की बच्ची को कोई बयान देने के लिए तैयार नहीं कर सकता। घटना 2018 की है, तब बच्ची की उम्र 3 वर्ष थी। कोर्ट ने कहा कि दोषी बच्ची के पड़ोस में रहता था। बच्ची दोषी को भाई कहती थी और उसने रिश्तों की मयार्दा का अपमान किया। दोषी का दोस्त पूरी घटना देखता रहा और उसने भी बच्ची को बुरी नियत से छुआ। तीसरा आरोपी जो नाबालिग था उसने भी बच्ची का यौन शोषण करने का प्रयास किया। अदालत में बच्ची और उसकी मां की गवाही सबसे अहम साबित हुई। अदालत में बच्ची की मां ने बताया कि उन्हें उनकी बेटी बिल्डिंग के कॉमन पैसेज में मिली थी और तीनों आरोपी भी वहीं मौजूद थे। एक आरोपी ने अपनी युवा उम्र का हवाला देते हुए कोर्ट से राहत मांगी थी। लेकिन कोर्ट ने उसे कोई भी राहत देने से इनकार कर दिया।

(पृष्ठ 1 का शेष)

अमेरिकी एफडीए ने फाइजर की वैक्सीन को सही माना

एफडीए ने मंगलवार को इससे संबंधित दो विश्लेषण जारी किए। इसमें से एक उसी के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया था और दूसरा वैक्सीन निमार्ता फाइजर और बायोएनटेक ने किया था। एफडीए के विश्लेषण में वैक्सीन के ज्ञात फायदों के बारे में बताया गया है। इसमें वैक्सीन की प्रभाविता का भी जिक्र किया गया है। एफडीए ने वैक्सीन की पहली खुराक के बाद और दूसरी खुराक से पहले संक्रमण के खतरे के कम होने का उल्लेख भी किया है। बता दें कि फाइजर ने भारत में भी वैक्सीन इस्तेमाल की अनुमति के लिए आवेदन किया है।

किसान आंदोलन

कोविड-19 प्रोटोकॉल के कारण 5 नेताओं को ही राष्ट्रपति से मुलाकात करने की इजाजत दी गई है। राष्ट्रपति कोविंद से विपक्षी नेताओं की होने वाली इस मुलाकात की जानकारी सीताराम येचुरी ने दी। माना जा रहा है कि ये मुलाकात कृषि कानूनों के मुद्दे पर हो सकती है।बता दें कि किसान पिछले 13 दिनों से दिल्ली बॉर्डर पर डेरा डाले हुए हैं। वे सरकार से कृषि कानूनों को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। वहीं, कल किसानों और सरकार के बीच छठे दौर की बातचीत भी है, जो बेहद अहम मानी जा रही है। दोनों पक्षों के बीच अब तक पांच राउंड की बातचीत हो चुकी है, जो बेनतीजा रही है।

डोकलाम विवाद

इस कड़ाके की सर्दी में भी 18 हजार फीट की ऊंचाई पर लद्दाख के रेतीले पहाड़ों पर दोनों सेनाएं आमने-सामने डटी हुई हैं।लेकिन ऐसा लगता है कि डोकलाम के बाद से ही चीन ने किसी भी स्थिति से निपटने की तैयारी शुरू कर दी थी। स्थानीय नागरिकों ने देखे चीनी शिविर एक सरकारी सूत्र ने बताया कि चीन डोकलाम विवाद के बाद से ही एलएसी के साथ अपने निचले क्षेत्रों में सैन्य शिविर बनाने में जुटा है। एलएसी के आसपास स्थानीय नागरिकों ने ऐसे 20 से अधिक शिविर देखे हैं। इन शिविरों को बना लेने से चीनी सेना को ये फायदा हुआ है कि वह अपने क्षेत्र में ज्यादा बेहतर तरीके से गश्त कर सकती है। साथ ही सीमा पर तनाव की स्थिति में चीनी सेना को मूवमेंट में भी आसानी रहेगी। भारत ने 2017 में भूटान के क्षेत्र में चीनी सेना के निर्माण कार्य को दिया था, इसके बाद डोकलाम में भारत और चीन की सेनाएं आमने-सामने आ गईं थीं। इस निर्माण के चलते चीन भारत के उस रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिस्से के बेहद पास आ जाता, जिसे चिकन नेक कहा जाता है। चिकन नेक वह हिस्सा है, जो भारत के मुख्य हिस्से और उत्तर पूर्वी क्षेत्र को आपस में जोड़ता है। इस हिस्से पर अगर चीन नियंत्रण कर ले तो भारत के लिए उत्तर पूर्व से जमीनी संपर्क टूट जाएगा। भारत के इस रुख की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी सराहना हुई थी। इसकी वजह ये पहली बार था, जब सीमा के मुद्दे पर किसी ने चीन की आंख में आंख डालकर बात की थी। वहीं पूर्वी लद्दाख में चल रहे दोनों देशों की सेनाओं के बीच जारी तनाव के दौरान भी 50 हजार से अधिक भारतीय सैनिक दुर्गम स्थानों पर चीन के सामने मजबूती से खड़े हैं।

समाचार विशेष
मुंबई, बुधवार, 9 दिसंबर 2020

बड़ा खुलासा

क्राइस्टचर्च मस्जिद का हमलावर आया था भारत, गुजारे थे तीन माह

क्राइस्टचर्च। न्यूजीलैंड के क्राइस्टचर्च शहर की दो मस्जिदों में पिछले साल हुए हमले को लेकर एक बड़ा खुलासा हुआ है। इस हमले को अंजाम देने वाला ऑस्ट्रेलियाई मूल के ब्रेंटन टैरेंट ने भारत सहित दुनियाभर की यात्रा की। उसने भारत में करीब तीन महीने गुजारे थे। इस भयावह गोलीबारी को लेकर जारी की गई एक विस्तृत रिपोर्ट में यह खुलासा किया गया है। गौरतलब है कि 15 मार्च, 2019 को ब्रेंटन टैरेंट ने क्राइस्टचर्च की दो मस्जिदों पर अंधाधुंध गोलीबारी की थी, जिसमें नमाज पढ़ने आए 51 नमाजियों की मौत हो गई थी। इनमें पांच भारतीय भी शामिल थे। इस हमले में न्यूजीलैंड दौरे पर पहुंचे बांग्लादेशी क्रिकेट टीम के कुछ खिलाड़ी बाल-बाल बचे थे। ये खिलाड़ी गोलीबारी से कुछ देर पहले ही नमाज पढ़कर मस्जिद से बाहर निकल आए थे। इस हमले में दर्जनों लोग घायल हुए थे। गोलीबारी ने न्यूजीलैंड को हिलाकर रख दिया था, क्योंकि इसकी गिनती दुनिया के सबसे शांतिपूर्ण देशों के रूप में होती है।

पांच भारतीयों समेत 51 नमाजी मारे गए थे

टैरेंट ने 2012 में जिम की नौकरी छोड़ दी थी

792 पन्नों के 'रॉयल कमीशन ऑफ इंक्वायरी' ने रिपोर्ट दी है कि स्कूल छोड़ने के बाद 30 वर्षीय हमलावर टैरेंट ने 2012 तक एक स्थानीय जिम में एक निजी प्रशिक्षक के रूप में काम किया था। 2012 में चोट लगने के बाद उसने जिम की नौकरी छोड़ दी।

पिता के पैसों से घूमने निकला: इसमें कहा गया है कि हमलावर ने जिम की नौकरी छोड़ने के बाद कभी काम नहीं किया। इसकी जगह, उसने अपने पिता से मिले पैसे और इन पैसों को निवेश करने के बाद प्राप्त हुई राशि से घूमना शुरू किया। 2013 में उसने पूरा न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया घूमा और फिर 2014 से 2017 के बीच उसने दुनिया की बाकी जगहों का दौरा किया।

सबसे ज्यादा वक्त भारत में रहा

18 महीनों की कड़ी मेहनत के बाद तैयार हुई जांच रिपोर्ट में बताया गया है कि इसने किसी देश में अगर सबसे अधिक समय तक वक्त गुजारा तो वो भारत था। जहां इसने 21 नवंबर, 2015 से 18 फरवरी, 2016 तक का वक्त गुजारा। हालांकि, इस रिपोर्ट में इस बात की जानकारी नहीं है कि टैरेंट ने अपने करीब तीन महीने के दौरे के दौरान क्या किया।

हमले की ट्रेनिंग के सबूत नहीं

हालांकि, 'द न्यूजीलैंड हेराल्ड' ने बताया कि इस बात के कोई सबूत नहीं है कि वह विदेशों में चरमपंथी समूहों के साथ मिला हो। ना ही इस बात के सबूत हैं कि उसने विदेश में हमले के लिए किसी तरह की ट्रेनिंग ली हो।

महाराष्ट्रः राज्यपाल कोश्यारी को हाईकोर्ट के नोटिस से राहत

सुप्रीम कोर्ट करेगा सुनवाई

संवाददाता

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी की उस याचिका पर सुनवाई के लिए राजी हो गई है, जो उन्होंने उत्तराखंड हाईकोर्ट से जारी कारण बताओ नोटिस के खिलाफ दायर की थी। सुप्रीम कोर्ट की सहमति से कोश्यारी को राहत मिल गई है। दरसअल हाईकोर्ट में दायर एक याचिका में कोश्यारी के मुख्यमंत्री रहने के दौरान आवंटित सरकारी बंगले का किराया कथित तौर पर नहीं भरने के कारण उनके खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की मांग की गई थी। इस के बाद हाईकोर्ट ने उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया था। सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति आरएफ नरीमन, न्यायमूर्ति केएम जोसफ और न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी की पीठ ने उत्तराखंड सरकार को नोटिस जारी किया तथा इस मामले को इसी मुद्दे पर लंबित अन्य याचिकाओं के साथ जोड़ दिया। राज्य सरकार की ओर से मौजूद अधिवक्ता ने नोटिस स्वीकार कर लिया।

पोखरियाल के खिलाफ कार्रवाई पर रोक लग चुकी

इससे पहले, 26 अक्तूबर को शीर्ष अदालत ने केंद्रीय मंत्री रमेश पोखरियाल के खिलाफ शुरू हुई अवमानना कार्यवाही पर रोक लगा दी थी। दरअसल, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्रियों द्वारा सरकारी आवास के किराए का भुगतान नहीं करने के उत्तराखंड हाईकोर्ट के पिछले साल के आदेश का कथित तौर पर पालन नहीं करने के मामले में पोखरियाल के खिलाफ कार्यवाही शुरू की गई थी। कोश्यारी ने हाईकोर्ट के आदेश पर स्थगन लगाने की अपनी याचिका में दलील दी थी कि वह महाराष्ट्र के राज्यपाल हैं और संविधान के अनुच्छेद 361 के तहत उन्हें ऐसी किसी भी कार्यवाही से संरक्षण प्राप्त है। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने पिछले वर्ष तीन मई को राज्य के पूर्व मुख्यमंत्रियों को आदेश दिया था कि पद से हटने के बाद वे जितनी अवधि तक सरकारी आवास में रहे हैं, उसका बाजार के मुताबिक किराया अदा करना होगा।

पारधी समाज का बेटा बना कैदीयों का मार्गदर्शक

नामदेव भोसले बोले 9 से 14 पाठशाला बदकर 46 गाँव भिक्षा माँगकर जीवन का गुजारा किया। अज भी मुझे वह दिन याद आते है। ऊस समय में लोकों को दिनभर रोटी माँगकर अपना गुजारा करता थाक. सुरात गाँव में लोगे को घंटो खडा रहकर भिक माँगता था फिर भों को ने वाले कुते को भगाने वाले लोगों को बचपन में भिक माँगकर आगे आदर्श समाजसेवक बना और आज साहित्यिक और आदिवासी समाजसेवक के रुप में महाराष्ट्रा के बाहर छत्तीसगढ में आम्बिकापुर के जेल में जाकर कैधीयों को मार्गदर्शन किया। सच में देश भक्त वह होता है जो समाज के साथा जुड़ा रहता है। जीवन में कुछ भी स्वार्थ न रखकर काम किया तो इस पर्यावरण में सभी सुख और समाधान अपने को मिलता है। फिर भी स्वार्थ इस अक्षर में दुःखा कि दुरगंधी हमरे आसपास होती है। सच वही धर्म है जो दुसरो को सुख देता है इस शब्दा में साने गुरुजी सब कुछ बनाया है। आज छत्तीसगढ यहा पर आम्बिकापुर केंद्रीय जेल में मार्गदर्शन मेला था उस समय मुख्य अतिथी थे आदिवासी समाजसेवक और साहित्यिक नामदेव भोसले बोल रहे थे यह कार्यक्रम जेल के कार्यालय में मार्गदर्शन किया, यह केंद्रीय जेल अम्बिकापुर, सरजा छत्तीसगढ के आम्बिकापुर जेल के पोलीस अधीक्षक श्रीमान. राजेंद्र कुमार गायकवाड जी ने अलग अलग जगह किया कार्य कविता के रुप में बताया क आगे जेल के कैद्यीयों का परिचय किया गया उस समय जेल के कैधीयों ने किया गया काम देखा, इस में विशेष एक किताबों कि लयाब्रो थी कप्रिंटींग प्रेस था, खादी उद्योग था। यह तयार किये गये कपडे बाहर बेचने के लिए जाते है। येथे लाकडी से अलग अलग चिजों कि निर्मिती कियी जाती है, इस माध्यम से कैदीयों को अच्छा रोजगार मिलता है। यहा हस्ते मे दो बार कीर्तन,भजन गायन किया जाता है क ऐसे संकृतीक कार्यक्रम से मन परिवर्तन किया जाता है, उस समय कुछ कैद्यायोने सुंदर गीत सुनाएं उस में से शांती प्रेम खेस औ गुरुदयाल सिंग जी के गायणानी मन हिला कर रख दिया क गुरुप्रित सिंग जी जो गीत सुनाएँ उनके आगे बडे बडे गायक भी फिके पड गए ऐसा लगो जीवन एक बार ही है क फिर भी राग, दोष, स्वार्थ, इस वजह से अपने हातों से जो गलतीयाँ होती है क उस वजह से हमें मिलती है, ऐसी हि एक शिव शेकर चेक्रास नामक कैदी ने कहा। वह पन्तीच्या हत्येत अजंन्म कारावास कि सजा हो गयी है, और कुछ लोग बोले हमें पंख होते तो यहा से उडकर जाते बाहर की दुनिया को देख पाते किंतू वह हमारे भाग्या में नही है क अभी जेल ही हमार घर है, यह सुनकर सबकी आखो में पानी आया। उस समय केंद्रीय जेल अम्बिकापुरचे पोलीस अधीक्षक श्रीमान. राजेंद्र कुमार गायकवाड जी और ऑड सारंगधर सिंग जी इनके हाथों से आदिवासी समाजसेवक और साहित्यिक नामदेव भोसले जी को सन्मानपत्र शाल श्रीफळ देकर सन्मानित किया गया।

मस्जिद के लिए मिली जमीन पर शॉपिंग मॉल जैसा अस्पताल बनेगा

कम खर्च में होगा किडनी व हार्ट का इलाज

संवाददाता

लखनऊ। सुन्नी वक्फ बोर्ड को अयोध्या के धन्नीपुर गांव में मिली जमीन में से 4 एकड़ में बनने वाले सुपर स्पेशियलिटी चैरिटी अस्पताल, इंडो इस्लामिक रिसर्च सेंटर, म्यूजियम और कम्युनिटी किचन का नक्शा तैयार हो गया है। अस्पताल की इमारत आधुनिक शैली में बने शॉपिंग मॉल की तरह खूबसूरत होगी। इसका नाम वर्ष 1857 के क्रांतिकारी मौलवी अजीमुल्ला, मौलाना अब्दुल बारी फरंगी महली या हकीम अजमल खां के नाम पर हो सकता है। इंडो इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन के मुताबिक इस चैरिटी अस्पताल में किडनी, हार्ट जैसी गंभीर बीमारियों का इलाज बेहद कम खर्च में किया जाएगा जिससे अयोध्या व आसपास के लोगों को इलाज के लिए लखनऊ और दिल्ली के चक्कर न लगाना पड़े। अस्पताल में 150 से 200 बेड की सुविधा होगी। ट्रस्ट ने मस्जिद के साथ ही अस्पताल, रिसर्च सेंटर व कम्युनिटी किचन का नक्शा तैयार करने की जिम्मेदारी जामिया मिल्लिया इस्लामिया में आर्किटेक्चर विभाग के अध्यक्ष प्रो. एसएम अख्तर को दी थी।

सूत्रों के मुताबिक सभी इमारतों का नक्शा तैयार हो चुका है, लेकिन ट्रस्ट इसका खुलासा नहीं कर रहा है।

साझी विरासत की दिखेगी झलक

इंडो इस्लामिक रिसर्च सेंटर और म्यूजियम में हिंदुस्तान की साझी विरासत की झलक दिखेगी। वर्ष 1857 के क्रांतिकारियों के साथ ही कबीर, रहीम, रसखान, अमीर खुसरो आदि की भी जानकारी होगी। वहीं महात्मा गांधी के करीबी मौलाना अब्दुल बारी फरंगी महली से भी रूबरू कराया जाएगा।

बुलडाणा हलचल

किसानों के बंद को सहज जन समर्थन, किसी ने ट्रेन रोकी तो किसी ने ट्रैफिक जाम किया

बुलडाणा। जहां भी किसानों का सवाल है, आम लोग भी इस लडाई में उनका साथ देते है, इसका जवाब आज 8 दिसंबर को जिले में देखने को मिला। नई कृषि कानून किसानों के हित में नहीं है, इस कानुन के खिलाफ किसानों आंदोलन नई दिल्ली में चल रहा है। इस आंदोलन के समर्थन में भारत बंद को पुकार गया था। बंद को कुछ अपवादों के साथ जिले में बड़ी प्रतिक्रिया मिली। जहां कोई अनुचित प्रकार नहीं हुआ। यहां पुलिस प्रशासन के कौशल को प्रदर्शित करता है। रैलियों, सिट-इन, रास्ता रोको और अन्य आंदोलन राजनीतिक और सामाजिक दलों और संगठनों ने बंद में भाग लिया। बुलडाणा में भारत बंद को सौ फीसदी प्रतिसाद मिला। विधायक संजय गायकवाड़ के नेतृत्वात मे आज सुबह रैली निकाली। जिस में महाविकास अगाड़ी के नेता हर्षवर्धन सपकाल, जलिंधर बुधावत, जयश्रीताई शेलके, नरेश शेलके, शिवसेना के तालुका प्रमुख लखन गाडेकर और शहर के प्रमुख गजेन्द्र मंडदे शामिल थे। इससे पहले महाविकास अगाड़ी के कार्यकर्ता जयस्तंभ चौक पर एकत्रित हुए और केंद्रिय सरकार के खिलाफ नारेबाजी की। शहर की लगभग सभी दुकानें दोपहर तक बंद रहीं। आवश्यक सेवाएं चिकित्सा, बैंक, पेट्रोल पंप शुरू थे। हालांकि दुकानें बंद रहीं, लेकिन चौराहों पर भीड़ बनी रही। भारत बंद की सफलता पर चर्चा चौकों में देखी गई।

स्वाभिमानी ने मलकापुर स्टेशन पर चेन्नई-अहमदाबाद एक्सप्रेस को रोक दिया

संवाददाता/अशफाक युसुफ

बुलडाणा। किसान संगठन केंद्र सरकार के कृषि कानूनों के खिलाफ पिछले 12 दिनों से दिल्ली की सीमा पर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। कृषि सुधार कानूनों को निरस्त करने, कृषि के लिए न्यूनतम जिंस मूल्य पर कानून बनाने आदि की मांग को लेकर आंदोलन खड़ा किया गया है।देश भर के किसानों ने इस पर आक्रामक रुख अपनाया है। केंद्र सरकार और किसान संगठनों के साथ बैठकें अक्सर असफल रही हैं। यह देखते हुए कि केंद्र सरकार किसानों की मांगों के प्रति गंभीर नहीं है, देश के सभी किसान संगठनों ने आज (8 दिसंबर) को भारत बंद का आह्वान किया है। बुलंदाना जिले के मलकापुर में बंद को प्रतिसाद मिला है। मलकापुर में स्वाभिमानी शेतकारी संगठन के नेता रविकांत तुपकर के नेतृत्व में आंदोलन शुरू हुआ। मलकापुर के रेलवे सटेशन पर चेन्नई अहमदाबाद एक्सप्रेस ट्रेन को स्वभीमानी शेतकरी संघटना के कार्यकर्ताओं ने रोका। इस समय, सरकार के खिलाफ नारे लगाए गए। पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के साथ-साथ महाराष्ट्र ने भी भारत बंद का समर्थन किया है। राकांपा, कांग्रेस, शिवसेना, माकपा और स्वाभिमानी शेतकारी संगठन ने आज बंद का आह्वान किया है। रेलवे पुलिस और शहर की पुलिस के आने के बाद रविकांत तुपकर और पुलिस में मौखिक रूप से फेरबदल हुआ। रैली एक घंटे तक चली। इससे ट्रेनों की योजना बाधित हो गई। इसके बाद रविकांत तुपकर और अन्य कार्यकर्ताओं को मलकापुर शहर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। कुछ घंटों बाद उन्हें छोड़ दिया गया।

समस्तीपुर हलचल

समस्तीपुर में भी दिखा बंद का असर, भारत बंद का मिला जुला रहा असर

संवाददाता/जेड अहमद

समस्तीपुर। भारत बंद को लेकर राजद के लोगों ने मुसरी घरारी के चौराहा पर बंद का मिला जुला असर देखा जा रहा हैं। बताया जाता है की किसान विरोधी कानून के खिलाफ राजद के कार्यकर्ताओं ने मुख्य मार्ग को सुबह से ही जामकर केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार के विरुद्ध जमकर नारेबाजी कर रहे थे। बंद मे शामिल लोगो का कहना है की जबतक सरकार इस कानून को वापस नहीं लेती हैं तो इसी तरह आवाज बुलंद करते रहेंगे। आज बंद को लेकर एनएच 28 और एसएच 103 मार्ग पूर्णत : बंद रहा, जिसके कारण सड़क के दोनो ओर गाड़ियों की लम्बी कतार लगी रही। बंद में शामिल मुख्य लोगों में जिला अध्यक्ष अल्प संख्यक प्रकोष्ठ समस्तीपुर के मो0 नसीम अब्दुल्लाह, अरविन्द सहनी, रंजीत राय, लालबाबु महतो, अनिस राय, कैफी आजमी, नैयर अताउर रहमान, नौशाद राजा के अलावा राजद के सैकड़ों कार्यकताओं ने हिस्सा लिया। ईधर दिल्ली किसान आंदोलन के समर्थन में किसानों द्वारा भारत बंद पर भाकपा माले के कार्यकर्ताओं ने किया समस्तीपुर के ताजपुर में नेशनल हाईवे का चक्का जाम कर सरकार का विरोध जताया। माले नेता सुरेन्द्र प्रसाद सिंह, बृहमदेव प्रसाद सिंह, बंदना सिंह, आशिफ होदा, नौशाद तौहीदी आदि के नेतृत्व में झंडे, बैनर, नारे लिखे प्लेकार्ड लेकर बड़ी संख्या में कार्यकर्ता गांधी चौक के पास सड़क जाम कर कर रहे थे प्रदर्शन। इसी तरह विभिन्न किसान संगठनों के समर्थन में राष्ट्रीय लोक समता पार्टी के जिला अध्यक्ष अनंत कुशवाहा के नेतृत्व में समस्तीपुर में किसान विरोधी बील काला कानून वापस लेने के मांग को लेकर भारत बंद का समर्थन रलोसपा के बैनर तले ओवरब्रिज के पास किया गया है। समस्तीपुर जिले के विभिन्न सड़को पर जुलूस निकाल कर बंद कराया। जिला अध्यक्ष अनंत कुशवाहा ने कहा की अगर भारत सरकार मनमानी करती रहेगी तो हम विपक्षी पार्टी व किसान संगठन व भारत के आवाम सरकार से लड़ते रहेंगे। उन्होने कहा की आज किसान दर दर की ठोकर खा रहे हैं। उनका कोई सुनने वाले नहीं हैं। भारत सरकार के द्वारा तीन काला कानून लाया गया। वह भारत के किसान के हित में नहीं है। वे कानून देश विरोधी कानून हैं। आज भारत सरकार चंद उद्योगपतियो के इशारे पर इस कानून को लाकर भारत के जनता को ठग रही है। बंद में अनंत कुशवाहा के अलावा रंजीत कुमार, लाल बाबू महतो, आदित्य कुमार ठाकुर, इन्द्रजीत कुमार, मुकेश कुमार सिंह आदि ने भाग लिया।

मधुबनी हलचल

किसान विरोधी इस सरकार को झुकना पड़ेगा फिर इस बारः बेदारी कारवाँ

संवाददाता/मो सालिम आजाद

दरभंगा। देश भर में किसान के आह्वान पर बंद को जो समर्थन मिला है वो तो बस एक झांकी है। इतिहास गवाह है कि किसान इस देश के दिल में धड़कता है। अगर मोदी सरकार ने किसानों की मांगें अतिशीघ्र नहीं मानी तो फिर वो देशव्यापी उग्र आंदोलन और संसद घेराव को भी तैयार रहें। अन्न उगाने वालों के साथ देश का हर गरीब मजदूर, मध्यम वर्गीय समाज मजबूती के साथ खड़ा है और इस बात को समझता है कि ये देश के किसानों की जमीन बड़े उद्योगपतियों को कौड़ी के भाव देना चाहती है जो हम भारत के सच्चे देशभक्त कभी होने नहीं देंगे। देश का किसान और नौजवान अपने अन्न का उचित मूल्य चाहता है और रोजगार चाहता है। यही देश की असली आवाज है। आज केवटी के भेड़ियाही निकट दरभंगा हवाई अड्डा के समीप ऑल इंडिया मुस्लिम बेदारी कारवाँ के अध्यक्ष नजरे आलम के नेतृव में एनएच 527 बी मुख्य सड़क पर आकर सभी वर्ग के लोगों ने किसानों के प्रति अपना समर्थन जताया और पूरी तरह आवागमन को बंद कर दिया। इस दौरान एमबुलेंस को जाने दिया गया। बंदी के दौरान सभी वर्ग के लोगों ने दिखा दिया कि देश के इन गंभीर मुद्दों पर कोई समझौता नहीं हो सकता है। बंदी समर्थन में राम प्रसाद यादव, शिव प्रसाद शर्मा, जकी अहमद, मो० नूरैन, कुद्दुस सागर, इम्तियाज अहमद भोला, मो० तबरेज, असजद, मो० हुसैन, मो० तालिब, मो० मुन्ना, हीरा निजामी, मो० आफताब, राजा खान, सोमा खान, अता अंसारी, अबरार अहमद, मो० अंजार, रवि कुमार, सोनू मंडल, हरी सहनी, मिथिलेश पासवान आदी सैकड़ों की संख्या में लोग 3 बजे तक डटे रहे।

रामपुर हलचल

अब्दुल गफूर इंजी० ने कहा कि किसानों के लिए जो तीन कानून पेश किये गये है वह किसानों को अमान्य हैं

संवाददाता/नदीम अख्तर

टाण्डा रामपुर। भारतीय किसान संस्था के संस्थापक एवं 34 स्वार पूर्व विधान सभा प्रत्याशी अब्दुल गफूर इंजी० ने कहा कि किसानों के लिए जो तीन कानून पेश किये गये है वह किसानों को अमान्य हैं इसी को लेकर आज पूरे भारत के किसानों के बन्द का ऐलान जो कारगर साबित हुआ होता दिखाई दे रहा है किसानों द्वारा अपनी मांगों को लेकर जगह जगह धरना प्रदर्शन भी किये जा रहे हैं किसानों को उनकी मांग के अनुसार लाभ नहीं मिल पा रहा है जो कि किसानों के प्रयास लगातार जारी है केन्द्र सरकार द्वारा लगाया गया कृषि कानून का विरोध आज पूरे देश में एकजुटता के साथ किया गया साथ ही सरकार का विरोधी कानून वापस नहीं किया जाता है तब तक व्यापारियों आदि सहित भारत बन्द का सहयोग करते रहेंगे किसानों के भारत बन्द का समर्थन भी किया गया उधर भारतीय जनता पार्टी के जुझारू नेता पालिका सभासद नीलेश वर्मा व भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के जिला मंत्री अब्दुल सलाम ने अपना विरोध जताते हुए कहा कि सरकार द्वारा जितनी भी योजनाएं किसानों आदि से सम्बंधित चलाई जा रही है वह सर्वोपरि है सरकार के विरूद्ध किसानों के हित में विपक्षी द्वारा जितनी भी मुददे उढाये जा रहे हैं वह सरासर गलत हैं भारत बन्द के दौरान नगर के अन्दर अधिक्तर दुकानें खुली रही बन्द का असर बहुत कम देखने को मिला।

राजस्थान हलचल

दलित समुदाय के 27 लोगों ने हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म को अपना लिया है

संवाददाता/सैय्यद अल्ताफ हुसैन

बाड़मेर। पश्चिमी राजस्थान में भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर बसे बाड़मेर जिले में एक बार फिर धर्म परिवर्तन का बड़ा मामला सामने आया है। यहां दलित समाज के दो दर्जन से ज्यादा लोगों ने हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया है। इसके लिये बकायदा बड़े समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में बौद्ध भिक्षुओं ने शिरकत की। विधि-विधान से दलित समाज के लोगों ने बौद्ध धर्म को अपनाया। आयोजन में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुये। जिले में पिछले दिनों में धर्म परिवर्तन की कई खबरें सामने आ चुकी हैं। धर्म परिवर्तन का यह मामला बाड़मेर जिला मुख्यालय से जुड़ा है। यहां पर समता सैनिक दल और भारतीय बौद्ध महासभा की तरफ से आयोजित समारोह में दलित समाज के 27 लोगों ने हिन्दू धर्म से नाता तोड़ते हुए बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। इनमें बाड़मेर के रामसर और पिलानी गांव के दो परिवारों ने तो अपने पूरे सदस्यों के साथ बौद्ध धर्म को अपनाया है। इनकी दीक्षा के लिए बड़े समारोह का आयोजन किया गया। इसमें बौद्ध भिक्षुओं के गुरु ने शिरकत की। बाबा साहेब अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर आयोजित इस समारोह में उनको भगवान बुद्ध के बताए नियमों और बातों का अनुसरण करने की प्रतिज्ञा दिलवाई गई। आयोजन में बड़ी संख्या में लोगों ने शिरकत की। समता सैनिक दल के जिलाध्यक्ष अमित धनदे ने बताया कि हिन्दू धर्म से बौद्ध धर्म को अंगीकार करने वाले सभी लोग दलित समुदाय से हैं। ये सभी लोग जिले के अलग अलग गांवों के रहने वाले हैं। इन लोगों का आरोप है कि वे हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था से कुंठित हैं। इसी वजह से वे अपने मूल धर्म से बौद्ध धर्म के साथ भगवान बुद्ध के बताए नियमों को अंगीकार कर रहे हैं। धर्म परिवर्तन के इस आयोजन के बाद हर तरफ इसकी चर्चा हो रही है।

बाड़मेर जिले में रेप का सनसनीखेज मामला आया सामने

संवाददाता/सैय्यद अल्ताफ हुसैन

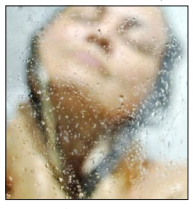

बाड़मेर। सरहदी जिले बाड़मेर से चौंकाने वाला मामला सामने आया है। आरोप है कि यहां एक वार्ड पार्षद ने नहाते समय एक महिला की फोटो खींच ली और वीडियो बना लिया। बाद में उन फोटो और वीडियो के आधार पर महिला को ब्लैकमेल कर उनसे कई बार रेप किया। आरोप यह भी है कि पार्षद ने महिला को अपने मित्र के साथ शारीरिक संबंध बनाने के लिए भी मजबूर किया। पार्षद के मित्र ने भी महिला से रेप किया। आरोपी रिश्ते में पीड़िता का भाई बताया जा रहा है। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। मामला जिले के बालोतरा से जुड़ा हुआ है। बालोतरा पुलिस उपाधीक्षक सुभाष खोजा ने बताया कि दर्ज प्राथमिकी के अनुसार, पीड़िता की शादी 4 साल पहले बालोतरा में ही हुई थी। शहर के वार्ड संख्या-16 से बीजेपी पार्षद कांतिलाल का उसके यहां आना जाना था। पीड़िता का आरोप है कि कांतिलाल ने नहाते समय उनके फोटो खींचने के साथ ही वीडियो बना लिए। इसके बाद फोटो और वीडियो दिखाकर ब्लैकमेल कर रेप किया। इतना ही नहीं, उसने अपने मित्र पायलां निवासी जोधाराम के साथ भी सोने को मजबूर किया। उसके बाद आरोपी वीडियो और फोटो वायरल करने की धमकी देकर उससे बार-बार रेप करता रहा गत 5-7 दिनों से पार्षद का एक ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। यह शहर में चर्चा का विषय बना हुआ है। पीड़िता की रिपोर्ट पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस उपाधीक्षक सुभाष खोजा का कहना है कि पीड़िता की रिपोर्ट के आधार पर आरोपी के खिलाफ रेप करने का मामला दर्ज किया गया है। मामले की जांच चल रही है। पीड़िता को मेडिकल मुआयना के लिये बुलाया गया है। जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार किया जाएगा।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

अपनी इन 3 गलतियों की वजह से डिप्रेशन का शिकार होती हैं महिलाएं

➤ आधुनिक स्त्री के जीवन में चिंता और तनाव घोलने वाले के कई कारण हैं।

➤ कभी कभी तनाव व चिंताएं बढ़कर खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है।

➤ भविष्य में होने वाली घटनाओं को लेकर आशंकित व उधेड़बुन में न पड़े।

आजकल बिजी लाइफस्टाइल के चलते लोगों का तनाव की चपेट में आना बहुत ही आम बात हो गई है। पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक तनाव की चपेट में आती है। इसका एक कारण यह भी है कि महिलाओं के पास जॉब के अलावा भी कई जिम्मेदारियां होती है। जिसका अप्रत्यक्ष रूप से उन पर इसे अच्छी तरह निभाने का भी दबाव रहता है। जैसे क्या मेरा प्रोजेक्ट सक्सेसफुल होगा? रात में यात्रा करते समय मैं सुरक्षित रह सकूंगी? मेरे बच्चे किसी मुसीबत में तो नहींपड़ेंगे? घर लौटने में लेट होने के कारण पति नाराज तो नहीं हो जाएंगे? पति का किसी के साथ अफेयर तो नहीं है? मेरे आसपास इतने सारे लोग हैं, फिर भी मुझे अकेलापन क्यों महसूस होता है? क्या मुझे प्रोफेशनल हेल्प की जरूरत है? आधुनिक स्त्री के जीवन में चिंता और तनाव घोलने वाले ये कुछ कारण हैं। इन वजहों से अक्सर महिलाएं चिंता में पड़ जाती हैं और उनकी जिंदगी निराशा के सागर में डूबने लगती है। आधुनिक स्त्री पर घर, परिवार, बच्चे और कॅरियर के साथ ही अन्य तमाम जिम्मेदारियां हैं। वह मल्टीटास्किंग है और उसकी व्यस्तताएं भी तमाम हैं। उन्हें एक समय पर कई लक्ष्य साधने हैं, फलस्वरूप उनके पास अपनी ऊर्जा का स्तर बनाए रखने के लिए शरीर को आराम देने व अपनी सेहत पर ध्यान देने के लिए वक्त नहीं है।

हम चर्चा करेंगे उन कारणों पर कि क्यों तनाव इतना बढ़ जाता है कि खतरनाक स्तर पर पहुंच जाता है और क्या है उसे नियंत्रण में रखने के जांचे-परखे उपाय, ताकि उसके नकारात्मक प्रभावों को बदलकर सकारात्मक ऊर्जा में परिवर्तित किया जा सके। जिसकी मदद से जिम्मेदारियों को बेहतर तरीके से निभाना संभव हो सके। यहां यह गौर करना जरूरी है कि क्यों तनाव व चिंताएं बढ़कर खतरनाक स्तर पर पहुंच जाती है। आइए जानते हैं तनावमुक्त रहने की

कुछ टिप्स-

हमेशा शांत व संयत रहें

कोई आपको नकारात्मकता की ओर उकसाने की कितनी भी कोशिश करे, पर आप शांत व संयत रहेंगी। कार्य और घर-परिवार की जिम्मेदारियां कभी खत्म नहीं होतीं। उनके मध्य आपको अपने हृदय में शांति और सुकून का भाव जगाना होगा। एक कार्य पूरा करने के बाद कुछ देर ब्रेक लेकर गहरी सांसें लें, ऊर्जा का संचय करें और फिर नए कार्य में लगें।

हमेशा पॉजिटिव रहे

क्रोध और निराशा को सकारात्मक विचारों और ऊर्जा में परिवर्तित करें। ऐसी आदतें विकसित करें, जिससे तनाव को दूर भगाना आसान हो सके। रोज का कार्य रोजाना निपटाने की कोशिश करें। मामला चाहे ऑफिस का हो या घर-परिवार का। व्यवस्थित दिनचर्या से तनाव दूर रखने में मदद मिलती है।

भविष्य को लेकर न रहें चिंतित

मन से डर को निकालें। यकीन मानिए, हर समस्या का समाधान होता है। कई बार दोस्त, परिवार या सहकर्मी की मदद से या हम स्वयं ही समस्या का समाधान खोजते हैं। वहीं, कई बार समय के साथ ही उस समस्या का हल मिल जाता है। भविष्य को लेकर संशय व समस्याओं को गंभीर तनाव का कारण न बनने दें।

चिंता को आदत न बनाएं

चिंता की प्रवृत्ति को आदत न बनने दें। भविष्य में होने वाली घटनाओं को लेकर आशंकित व उधेड़बुन में पड़े रहने के बजाय तर्क का रास्ता अपनाएं। जब कभी भविष्य को लेकर आशंकित महसूस करें तो जो कार्य कर रही हों उससे थोड़ी देर का ब्रेक ले लें। किसी दूसरे विचार पर ध्यान केन्द्रित करके मस्तिष्क को शांत करने का प्रयास करें। लंबे समय से चली आ रही चिंता व तनाव की स्थिति में प्रोफेशनल मदद की जरूरत होती है। इसलिए अगर आपको इसकी जरूरत महसूस हो तो मदद लेने में हिचक महसूस न करें। आपको बस अपने सोचने के तरीके में बदलाव लाने के लिए मदद की जरूरत है, ताकि आप जिंदगी में प्रसन्न व ऊर्जावान महसूस कर सकें।

समस्या के बारे में ज्यादा न सोचें

किसी भी चिंता या तनाव को पूरे दिन स्वयं पर हावी न रहने दें। जीवन में कोई समस्या या उलझन है तो उस ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है, पर लगातार उस दिशा में सोचते रहना भी ठीक नहीं है। उस ओर से दिमाग हटाकर किसी अन्य महत्वपूर्ण विषय पर ध्यान केन्द्रित करें या कुछ दिनों के लिए घूमने निकल जाएं। इस तरह नयी ऊर्जा से पूर्ण होकर समस्या का हल तलाशने की कोशिश करें। याद रखें कि इस दुनिया में ऐसा कोई शख्स नहीं है, जिसके जीवन में चिंताएं और तनाव न हों। ये सब आधुनिक जिंदगी का हिस्सा हैं, इसलिए खुशमिजाज रहते हुए युक्तिपूर्वक उनका सामना करें। अपनी रोजाना की जिंदगी में चिंताओं के बिंदुओं को सूचीबद्ध करें और व्यवस्थित रूप में उनका समाधान सुनिश्चित करें। अगर किसी समस्या का हल सूझ न रहा हो तो उसे कुछ समय के लिए यूं ही छोड़ देना बेहतर है।

पार्टी में जाने से पहले सिर्फ 20 मिनट के लिए लगाएं यह Mask

पार्टी और ब्यूटी दोनों ही महिलाओं के लिए खास होते हैं। एक दम से किसी पार्टी में जाना पड़े और फेशियल न करवाया हो तो औरतों के लिए मुसीबत खड़ी हो जाती है। इसके न लिए तो उनके पास पार्लर जाने का समय होता है और न ही किसी नए प्रॉडक्ट को एक दम से इस्तेमाल किया जा सकता है। उसके लिए बेहतर है कि नेचुरल तरीकों को अपनी कर घर पर ही फेशियल जैसा निखार पा सकते हैं। इससे चेहरे पर किसी तरह का साइड इफैक्ट होने का भी डर नहीं रहेगा।

फेशियल करने के लिए जरूरी सामान

बेसन- 1 टीस्पून, चंदन पाउडर-1 टीस्पून, कच्चा दूध- 4 टीस्पून, आलू(कद्दूकस किया हुआ)- 1

इस तरह करें इस्तेमाल

1. सारी सामग्री को एक साथ मिला कर मिक्सी में पीस कर पेस्ट तैयार कर लें। **2.** इस तैयार पेस्ट को चेहरे पर 20 मिनट के लिए लगा लें और सूखने दें। **3.** इसके बाद पानी से चेहरे को साफ कर लें। **4.** चंदन का पाउडर बैक्टिरिया से लड़ने में मददगार है। इसके अलावा झुर्रियों,फाइन लाइन्स, दाग-धब्बों को मिटाने में भी यह बहुत लाभकारी है। **5.** बेसन टैनिंग मिटाने का काम करता है। **6.** दूध से नेचुरल मॉइश्चराइजर बरकरार रहता है। **7.** आलू त्वचा की रंगत निखारने का काम करता है।

इन आसान से टिप्स को अपनाकर गर्मियों में पाएं दमकती त्वचा

सुंदर दिखना हर किसी की चाहत होती है। मगर गर्मियों में धूप के कारण चेहरे का रंग काला और होंठों का रूखा- सूखा होना आम सी बात है। इन समस्याओं से राहत पाने के लिए लोग पार्लर जाकर ट्रीटमेंट करवाते हैं। जिसमें बहुत से पैसे खर्च हो जाते हैं। हर बार सुंदर और निखरी त्वचा पाने के लिए इतने पैसे खर्चे नहीं किए जा सकते। ऐसे में अपनी त्वचा का थोड़ा सा ध्यान रखकर बेदाग और ग्लोइंग स्किन पाइ जा सकती हैं। तो आइए जानते हैं उन तरीकों के बारे में जो आपकी खोई हुए खूबसूरती को वापस लौटाते हैं।

⏭ गर्मियों के मौसम में स्किन को टैनिंग से बचाने के लिए सनस्क्रीम जरूर लगाएं। धूप में जाने से 15 मिनट पहले ही क्रीम को चेहर पर लगा लें। हेमाश ऐसी सनस्क्रीम का इस्तेमाल करे जिसमें रढऋ की मात्रा 30 हो।

⏭ इस मौसम में चेहरे पर ज्यादा मेकअप न लगाएं। मेकअप करने से चेहरे पर बहुत ज्यादा पसीना आता है। पसीना आने से चेहरा गंदा लगेने लगता है। चेहरे को खूबसूरत बनाने के लिए हल्का सा मेकअप करें।

⏭ ग्लोइंग स्किन पाने के लिए दिन में कम से 8 गिलास पानी जरूर पीएं। इतना पानी पीने से शरीर से विषैले पदार्थ आसानी से बाहर निकल जाएंगे और स्किन ग्लोइंग होगी।

⏭ चेहरे पर क्रीम और पूरे शरीर पर बॉडी लोशन जरूर लगाएं। इस मौसम में फ्रूट्स वाला लोशन लगाना चाहिए। गर्मियों में शरीर और चेहरे को हाइड्रेट करना बहुत जरूरी होता है।

⏭ आंखों को धूप और झुर्रियों से बचाने के लिए सन ग्लासिस लगाएं। इसको लगाने से आंखों में धूल- मिट्टी नहीं जाएगी।

⏭ इस मौसम में होंठ बेजान और रूखे हो जाते हैं। होंठों को गुलाबी बनाने के लिए रात को सोने से पहले लिप बाम जरूर लगाएं। इसके अलावा जब भी अपने होठों पर लिपस्टिक लगाएं तो इससे पहले थोड़ा सा कंसीलर लगा लें। इसके बाद लिपस्टिक लगाएं। ऐसा करने से आपके होंठ गुलाबी और खूबसूरत दिखेंगे।

⏭ टैन हटने से त्वचा स्वस्थ और चमकदार होती है। टैन हटाने के लिए 2 से 3 बादाम, थोड़े से नींबू के रस तथा थोड़े दूध का पेस्ट बनाएं। इस पैक को रात में लगाएं तथा सुबह चेहरे को गुनगुने पानी से धो लें।

संक्रामक होता है टायफायड बुखार, जरूरी हैं ये सावधानियां वर्ना फैलता है वायरस

टायफायड एक तरह का बुखार है, जो संक्रामक होता है। इसी कारण घर में किसी एक सदस्य को टायफायड होने पर अन्य सदस्यों को भी इसके होने का खतरा होता है। मौसम में बदलाव और कुछ गलत आदतों के कारण इस बुखार के वायरस आपको परेशान कर सकते हैं।

टायफायड होने पर आमतौर पर जुकाम, खांसी, सिर-दर्द, बदन दर्द, बुखार जैसे समस्याओं की शिकायत रहती है टायफाइड तेज बुखार से जुड़ा रोग है जो सेलमोनेला टायफाई बैक्टीरिया द्वारा फैलता है यह बैक्टीरिया खाने या पानी से, मनुष्य द्वारा एक जगह से दूसरी जगह अन्य लोगों तक पहुंचता है सेलमोनेला पेराटायफाई इसी प्रकार का एक बेकटीरिया है जो आम तौर पर कम गंभीर बीमारी का कारण बनता है कई बार लापरवाही कि वजह से टायफाइड बुखार बिगड़ जाता है, जिससे कई और बीमारियां आपको घेर सकती हैं।

दैनिक मुंबई हलचल
अब हर सच होगा उजागर

दीपिका के पास इस समय हैं 5 बेहतरीन फिल्में

दीपिका पादुकोण के पास इस समय 5 बेहतरीन फिल्में हैं। शकुन बत्रा की अगली फिल्म, नाग अश्विन की अगली फिल्म, 'द इंटर्न', 'पठान' और 'द्रौपदी'। दीपिका पादुकोण सभी शैलियों की बड़ी फिल्मों के साथ दर्शकों को चौंकाने के लिए तैयार हैं। वह एक रोमांटिक ड्रामा से जासूसी थ्रिलर, साई-फाई, कॉमेडी-ड्रामा और पौराणिक कथाओं के साथ तैयार हैं। एक के बाद एक, बिना ब्रेक लिए। हाल ही में दीपिका, शकुन बत्रा की अगली फिल्म की शूटिंग के लिए देखी गई। हमेशा की तरह सहज दीपिका ने बताया, सेट पर वापस आना और मुझे वही करना बहुत अच्छा लगता है जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद है- कैमरे के सामने अपनी कला को प्रदर्शित करना। वह वर्तमान में शकुन की अगली फिल्म और शाहरुख खान के साथ 'पठान' की शूटिंग में व्यस्त हैं। वह आगे कहती हैं, इस समय मेरे पास कई फिल्में हैं इसलिए ब्रेक की कोई गुंजाइश ही नही है। मेरी सभी फि ल्में पहले ही तय हो चुकी हैं और उन पर निर्णय भी लिया जा चुका है, लेकिन मैं अभी उन सभी के बारे में बात नहीं कर सकती।

डबल रोल निभाएंगे अक्षय

एक्टर अक्षय कुमार एक बार फिर 'मिशन मंगल' के डायरेक्टर जगन शक्ति के साथ काम करने जा रहे हैं। अब इस फिल्म को लेकर नई जानकारियां सामने आई हैं। बताया जा रहा है कि यह एक बड़े बजट की साइंस फिक्शन फिल्म होगी। यही नहीं, अक्षय कुमार इसमें डबल रोल में नजर आएंगे। खबर के मुताबिक मिशन मंगल की सफलता के बाद अक्षय कुमार के लिए जगन शक्ति को इस नए प्रोजेक्ट के डायरेक्टर के रूप में लेना एक आसान विकल्प था। जगन शक्ति और अक्षय कुमार की अपकमिंग फिल्म का टाइटल अभी तक तय नहीं हुआ है, लेकिन इतना पक्का है कि यह बड़े बजट की एक धमाकेदार साइंस फिक्शन फिल्म होगी। फिल्म में शानदार वीएफएक्स वर्क होगा, जिसके लिए अक्षय कुमार ने बजट की सभी सीमाएं हटा दी हैं। सूत्र ने यह जानकारी भी दी है कि जगन शक्ति की फिल्म में अक्षय कुमार डबल रोल निभाते दिखेंगे। दोनों ही किरदार काफी अलग होंगे।

कैटरीना कैफ को लेकर अली अब्बास जफर बनाएंगे सुपर सोल्जर

मेरे ब्रदर की दुल्हन और टाइगर जिंदा है के बाद कैटरीना कैफ और अली अब्बास जफर एक बार फिर साथ काम करने जा रहे हैं। यह एक सुपरहीरो फिल्म होगी। बॉलीवुड में पहली बार ऐसी सुपरहीरो फिल्म बनने जा रही है जिसमें लीड रोल में एक फीमेल एक्टर हैं। कैटरीना कैफ की इस फिल्म का नाम भी तय हो गया है। इसे 'सुपर सोल्जर' कहा जाएगा। फिलहाल फिल्म का प्री-प्रोडक्शन वर्क चल रहा है। फिल्म को कई देशों में फिल्माया जाएगा। अबू धाबी, दुबई, पोलैंड, जॉर्जिया और भारत के उत्तराखंड में फिल्म की शूटिंग होगी। अली अब्बास जफर कई लोकेशन्स फाइनल कर चुके हैं। फिल्म में कोई हीरो नहीं होगा। अली के अनुसार फिल्म में पुरुष हीरो की जरूरत ही नहीं है और न ही फिल्म में रोमांटिक ट्रेक होगा। कैटरीना के कंधों पर ही फिल्म का भार होगा। कैटरीना कैफ जल्दी ही मार्शल आर्ट्स की ट्रेनिंग शुरू करने वाली हैं। उन्हें फिट दिखने के लिए भी मेहनत करना होगी। कैटरीना ने तैयारियां शुरू कर दी है। फिल्म की शूटिंग अगले साल से शुरू होने वाली है।